कालभैरवाष्टकं

कालभैरवाष्टकं

देवराज सेव्यमान पावनांघ्रि पंकजं
व्याळयज्ञ सूत्रमिंदु शेखरं कृपाकरम् |
नारदादि योगिबृंद वंदितं दिगंबरं
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे || 1 ||

भानुकोटि भास्वरं भवब्धितारकं परं
नीलकंठ मीप्सितार्ध दायकं त्रिलोचनम् |
कालकाल मंबुजाक्ष मस्तशून्य मक्षरं
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे || 2 ||

शूलटंक पाशदंड पाणिमादि कारणं
श्यामकाय मादिदेव मक्षरं निरामयम् |
भीमविक्रमं प्रभुं विचित्र तांडव प्रियं
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे || 3 ||

भुक्ति मुक्ति दायकं प्रशस्तचारु विग्रहं
भक्तवत्सलं स्थितं समस्तलोक विग्रहम् |
निक्वणन्-मनोज्ञ हेम किंकिणी लसत्कटिं
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे || 4 ||

धर्मसेतु पालकं त्वधर्ममार्ग नाशकं
कर्मपाश मोचकं सुशर्म दायकं विभुम् |
स्वर्णवर्ण केशपाश शोभितांग निर्मलं
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे || 5 ||

रत्न पादुका प्रभाभिराम पादयुग्मकं
नित्य मद्वितीय मिष्ट दैवतं निरंजनम् |
मृत्युदर्प नाशनं कराळदंष्ट्र भूषणं
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे || 6 ||

अट्टहास भिन्न पद्मजांडकोश संततिं
दृष्टिपात नष्टपाप जालमुग्र शासनम् |
अष्टसिद्धि दायकं कपालमालिका धरं
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे || 7 ||

भूतसंघ नायकं विशालकीर्ति दायकं
काशिवासि लोक पुण्यपाप शोधकं विभुम् |
नीतिमार्ग कोविदं पुरातनं जगत्पतिं
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे || 8 ||

कालभैरवाष्टकं पठंति ये मनोहरं
ज्ञानमुक्ति साधकं विचित्र पुण्य वर्धनम् |
शोकमोह लोभदैन्य कोपताप नाशनं
ते प्रयांति कालभैरवांघ्रि सन्निधिं ध्रुवम् ||

इति श्रीमच्चंकराचार्य विरचितं कालभैरवाष्टकं संपूर्णम् |